

MArk. P. 119, 18. निरुद्धस्रोतोगण Bhāg. P. 4, 22, 39. — 7) etwa Geschlechtsfolge: कुले स्रोतसि संक्षेपे यस्य स्याद्योनिसंकरः MBh. 13, 2606.

— Häufig (aber nicht in den Bomb. Ausg.); स्रोतम् geschrieben. — Vgl. उत्प०, ऊर्ध्व०, कर्णस्रोतम् (das hierher gehört), कर्णस्रोतम् (auch HARIY. 2921; könnte an beiden Stellen auch Ohrloch bedeuten), गर्ग०, तिर्यक्०, त्रि०, प्रति० (auch JĀG. 3, 249), प्रत्यक्०, प्राक्०, वि०, स०, सप्त०, सकृद०.

स्रोतस am Ende eines comp. = स्रोतस्; s. वरुण०, त्रिस्रोतसी.

स्रोतस् (von स्रोतस्) 1) adj. P. 4, 4, 113. Schol. in Strömen fließend AV. 19, 2, 4. — 2) m. Dieb und ein N. Çiva's ÇABDĀRTHAK. bei WILSON.

स्रोतस्वती (wie eben) f. Fluss AK. 1, 2, 3, 29.

स्रोतस्विनी (wie eben) f. dass. BUARATA zu AK. 1, 2, 3, 29 nach ÇKDr. H. 1080. HALĀ. 3, 44.

स्रोतोन्न न. Spiessglanz, Antimon Suçr. 2, 326, 5. 339, 15. 347, 8. 349, 13. 360, 6.

स्रोतोञ्जन n. dass. AK. 2, 9, 101. H. 1051. RATNAM. 280. RĀGĀN. 13, 98.

स्रोतोद्भव (स्रोतस् + उद्भव) n. dass. RĀGĀN. 13, 98.

स्रोतोन्दीभव n. dass. ebend.

स्रोतोन्ध n. Rüsselöffnung (beim Elephanten) Megh. 43.

स्रोतोवह f. Fluss, Strom ÇĀk. 50.

स्रोतोवहा f. dass. ĠĀTĀDH. im ÇKDr. RAGH. 6, 52. ÇĀk. 143. fg. VIKR. 67, 4.

स्रोतार्थ (von स्रोतस्) f. fluthendes Wasser, Welle, Strom; pl. RV. 3, 33, 9. 10, 104, 8. des Meeres AV. 1, 32, 3. 4, 26, 4. यत्र यत्ति स्रोत्याः 6, 98, 3. नाव्य 8, 7, 15. 10, 1, 16. TS. 3, 4, 5, 1. Ait. Br. 3, 39. nach P. 4, 4, 113 auch perisp.

स्रोतमत (von सुगमत्) n. N. eines Sāman Ind. St. 3, 246, a. LĀT. 7, 1, 1.

स्रोत्र adj. (f. ङ) adj. in Sruḡha geboren, sich dort aufhaltend, dorthin führend u. s. w. Schol. zu P. 4, 3, 25 und 86. Ind. St. 13, 377. fg. स्रोत्रभार्य, स्रोत्रोपाशा, स्रोत्रोमानिनी, स्रोत्रोपते Schol. zu P. 6, 3, 39.

स्रोच (von सुच) adj. in einem Löffel befindlich Comm. zu KĀT. Çr. 410, Anm.

स्रोत n. N. eines Sāman Ind. St. 3, 246, a.

स्रोतिक (von स्रोतस्) n. Muschel RĀGĀN. 13, 130.

स्रोतोवह (von स्रोतोवहा) adj. fluvialis: स्रोतस् ÇĀk. 50, v. l.

स्रोच MBh. 3, 3779 fehlerhaft für स्रोत (so ed. Bomb.).

स्व, स्वति = स्व इवाचरति. स्वामास Vop. 21, 7.

स्व Declination gaṇa सर्वादि zu P. 4, 1, 27. 35. 7, 1, 16. Vop. 3, 9, 12. 37. vor स्वा behält ein Femininum im comp. seinen Charakter 6, 13. gaṇa प्रियादि zu P. 6, 3, 34. 1) adj. (f. स्त्री) स्वस्मिन् RV. 1, 132, 2. स्वस्याम् 9, 79, 3. eigen (mein, dein sein u. s. w.; Gegens. अरण, पर) AK. 3, 4, 22, 213. H. 562. an. 1, 14. MED. v. 2. प्र स्वां मतिमतरत् RV. 1, 33, 13. 119, 8. वधीं वृत्रं स्वेन भामेन 165, 8. स्वमेकी घभि वः स्वाम 7, 56, 24. तन्वत् तव स्वाम् 6, 11, 2. सीदं क्वातः स्व उं लोके 3, 29, 8. स्वे दम घा 4, 2, 8. रे-ज्झमिभिषसा स्वस्य मन्योः 17, 2. 7, 24, 6. नृहि स्वमायुश्चित्ते जनेषु 23, 2. न स स्वा दत्तः 86, 6. तनू 8, 11, 10. सखा 59, 11. पन्था यस्ते स्वः 10, 18, 1. 36, 2. वर्णा die eigene d. h. gewöhnliche Farbe AV. 1, 23, 2. जन 5, 30, 2. 6, 43, 1. 40, 1. 142, 1. 7, 108, 1. गृह 14, 2, 19. पितरः unsere 18, 2, 29. ÇAT. Br. 1, 4, 3, 17. देवता 13, 1, 3, 3. 14, 3, 4, 20. TS. 2, 1, 9, 1. घतः स्या RV. Prāt. 2, 8, 4, 1. 3. 6, 1. 6. पावत्स्वम् so weit sie ihm gehören KĀT.

Çr. 4, 2, 28. — Die Flexion und der Gebrauch des Wortes in der späteren Sprache ergibt sich aus dem Folgenden. Es wird bezogen:

a) auf eine 3te Person und zwar α) auf das grammatische Subject:

स्वं स्वं चरित्रं शितेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः M. 2, 20. प्रकृतिं स्वाम् Bhāg.

4, 6. MBh. 3, 2111. गताः स्वं स्वं गृहं सुराः 1845. R. 1, 1, 65. 58, 9. सूर्या-

पाये न खलु कमलं पुष्पति स्वामभिष्याम् Megh. 78. ÇĀk. 18. 131. स्वयैव

प्रभया द्योतते MBh. 3, 1746. स्वयोदीरितया (= स्वयमुदीरितया) स्वश-

क्त्या Bhāg. P. 3, 8, 12. शरीरात्स्वात् M. 1, 8. अभसः स्वस्मात् Spr. (II)

7017. स्वस्य नाम्नः M. 2, 124. मातुः स्वस्याः RAGH. 12, 13. स्वे स्वे ऽतरे

M. 1, 63. 8, 42. स्वस्मिन्स्काधे R. GORR. 2, 37, 12. KATHĀS. 25, 294. RĀGĀ-

TAR. 1, 18. 3, 265. 5, 48. स्वाः स्वाः प्रजाः M. 1, 61. स्वानि कर्माणि 8,

42. 1, 30. स्वैः कर्मभिः 4, 3. R. 1, 6, 6. स्वेभ्यः स्वेभ्यस्तु कर्मभ्यः M. 12, 70.

स्वेषु कर्मसु 4, 155. am Anf. eines comp.: दीप्यमानः स्ववपुषा देववदि-

वि मोदते 2, 232. 3, 45. स्वमांसं परमंसेन यो वर्धयितुमिच्छति 3, 52. 9,

298. अरविन्दानामामोदमुपनिव्रतौ स्वनिःश्वासानुकारिणाम् RAGH. 1, 43.

2, 4. ÇĀk. 8, 22. Spr. (II) 6704. KATHĀS. 103, 73. Hit. 17, 4. LA. (III) 8,

20. 11, 18. 36, 6. Bhāg. P. 1, 8, 13. — β) auf das logische Subject (instr.):

प्रकल्प्या तस्य तैर्वृत्तिः स्वकुटुम्बात् M. 10, 124. पयः पूर्वेः स्वनिःश्वासक-

वोष्णमुपभुज्यते RAGH. 1, 67. राज्ञा स नीतो अस्वस्वमन्दिरम् KATHĀS. 18,

246. 249. Bhāg. P. 3, 2, 12. — γ) auf einen gen.: स्वे स्वे धर्मे निविष्टा-

नाम् M. 7, 35. तेषां स्वं स्वमभिप्रायमुपलभ्य पृथक्पृथक् 57. जीवन्तीनां तु

तासां ये तद्धरेयुः स्ववान्धवाः 8, 29. तेषां दोषानभिष्याप्य स्वे स्वे कर्म-

णि तन्नतः । कुर्वति शासनं राज्ञा 9, 262. स्वधियो निश्चयो नास्ति यस्य

Spr. (II) 7280. स्वशक्त्या कुर्वतः कर्म (nom.) न चेत्सिद्धिं प्रयच्छति 7327.

7340. स्वमुखं नास्ति साध्वीनां तासां भर्तुमुखं मुखम् KATHĀS. 39, 53. तस्याः

स्वपतिः MArk. P. 16, 52. अवस्थितानामनुशासने स्वे (d. i. अज्ञस्य) — अज्ञ-

स्य Bhāg. P. 3, 1, 45. 8, 26. स्वपतां निद्रया स्वया ein Schlaf, über den sie

selbst verfügen, Spr. (II) 908. — δ) auf einen loc.: स्वगृहान्गते ऽपि

स्निग्धे पापं विशङ्कते Spr. (II) 7268. — ε) auf einen acc.: श्रार्थद्वयमिवा-

नार्यं कर्मभिः स्वैर्विभावयेत् M. 10, 57. धातरं स्वपुरं प्रेषयामास MBh. 3,

3055. चातुर्वर्ण्यं च लोके ऽस्मिन्स्वे स्वे धर्मे निवेदयति R. 1, 1, 92. 42, 1.

RAGH. 2, 70. तं स्वेदत्तं पृष्ठवानृपः RĀGĀ-TAR. 4, 278. 414. श्रथार्तुनं स्वे

(nom. pl.) परिवार्य सैनिकाः — अश्रुवन् MBh. 8, 708. विद्रुयं स्वभार्या

जघान VARĀH. BĀU. S. 78, 1. Spr. (II) 3191. — ζ) auf das im. comp. vor-

angehende Wort: सीतास्वहस्तोपहृताय्यपूज RAGH. 14, 19. — η) auf

ein zu ergänzendes allgemeines Subject: क्वाया स्वा दासवर्गश्च so v. a.

die Schaar der Diener ist des Mannes Schatten M. 4, 185. धाता स्वः

Spr. (II) 873. स्वं चेतकर्मफलं न स्यात् MBh. 13, 313. स्वहस्तधृत्पण्ड-

मिवातपत्रम् 1493. स्वगृहे पातव्यः 6415. स्वगुणं परदोषं च वक्तुम् 7266.

अथ नायिका त्रिविधा स्वान्या साधारणस्त्रीति SĀU. D. 96. — b) auf die

2te Person und zwar α) auf das grammatische Subject: पदानि गणय-

न्वाह् स्वानि MBh. 3, 2618. धातरं स्वं प्रक्षुष्य R. 6, 37, 77. तमपि स्वं

नियोगमशून्यं कुरु ÇĀk. 24, 16. 81, 4. मावमंस्थाः स्वमात्मानम् Spr. (II)

922. KATHĀS. 24, 181. स्वशरीरेण स्वर्गं गच्छ R. 1, 60, 13. Megh. 96. Spr.

(II) 7328. ÇĀk. 112, 18. KATHĀS. 41, 37. VER. in LA. (III) 25, 22. — β)

auf das logische Subject (instr. oder zu ergänzen): बालिशस्वं नृश्रेष्ठ

गम्यतां स्वपुरम् R. 1, 38, 5. VIKR. 27, 3. — γ) auf einen gen.: स्वमेव

स्थानमेतत् KATHĀS. 61, 120. कल्पं नृकवासस्ते कितवास्ति स्वपातकैः